DR. SUMAN LAL RAY
Assistant Professor,
Deptt. of Sanskrit,
S.R.A.P. college, Bara chakia

B.A. (Hons.) Part-II
Subject - Sanskrit
Paper - IV

अभिज्ञानशाकुन्तलम् (प्रथमोऽङ्कः)

श्लोकों का हिन्दी अनुवाद

श्लोक सं०- 28

अनुयास्यन् मुनितनयां सहसा विनयेन वारितप्रसरः।
स्थानादनुच्चलन्नपि गत्वेव पुनः प्रतिनिवृत्तः॥

अन्वयः

मुनितनयां सहसा अनुयास्यन् विनयेन पुनः वारितप्रसरः अहं स्थानात् अनुच्चलन्नपि गत्वा प्रतिनिवृत्तः इव (अस्मि)।

अनुवाद

मैं तो मुनिकन्या शकुन्तला के पीछे-पीछे जाना चाहता था, पर शिष्टाचार के अनुसार एकाएक रुक गया हूँ। यद्यपि मैं उठा नहीं हूँ, पर प्रतीत होता है कि उसके पीछे-पीछे जाकर लौट रहा हूँ।

— 0 —